بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله واصحابه اجمعين الى يوم الدين

12
ربیع الاول
1431ھ

अंधा धुंद पैरवी का अन्जाम

Research Paper 2a

27
February
2010

मेरे मुसलमान भाईयों! शैतानी वसवसों के बावजूद **अपनी मौत से पहलें पहलें** सिर्फ़ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आख़िर **लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!**

“ईमान” की असल बुनियाद क्या है?

अलहम्दुलिल्लाह ﷻ !हम मुसलमान हैं और हमारे ईमान की असल बुनियाद अल्लाह ﷻ ﷲ और उसके प्यारे महबूब ﷺ की सच्ची मुहब्बत ही तो है। यही वजह है कि कोई मुसलमान जान बूझकर कभी इन हस्तियों से मुताल्लिक़ गुस्ताख़ाना नज़रियात रखने का सोच भी नही सकता क्योंकि यह चीज़ दुनिया व आख़िरत में उसकी बर्बादी का सबब बन सकती है चुनाँचे:

✪ اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ٥

[سورة الاحزاب ، آيت نمبر57]
(सूरातुल अहज़ाब, आयत न॰ 57)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “बेशक जो लोग ﷻ ﷲ और उसके रसूल ﷺ को तक्लीफ़ देते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में ﷻ ﷲ की फटकार है और उसने उनके लिये ज़लील व ख़्वार कर देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।" ﴾नऊज़ु बिल्लाह ﷻ﴿

यहूदो नसारा की “गुमराही” की बड़ी वजह:

ﷻ ﷲ ने यहूदियों और ईसाइयों की गुमराही व बर्बादी की सबसे बड़ी वजह का ज़िक्र यूँ फ़रमाया है:

✪ .... اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ٥

[سورة التوبه ، آيت نمبر31]
(सूरातुल तौबह, आयत न॰ 31)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “उन (यहूदी और ईसाई) लोगों ने ﷻ ﷲ को छोड़ कर अपने दर्वेश लोगों और उलेमा को अपना रब बना लिया है”.
(वहिह को छोड़ कर अपने बुज़ुर्गों को मानते हैं)

नोट: यहूदियों और इसाइयों के इस गुमराहकुन तर्जे अमल के बरअक्स ﷻ ﷲ ने अपने महबूब सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के ज़रीए हमें वहिह की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाई है:

✪ .... اِيْتُوْنِىْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ٥

[سورة الاحقاف ، آيت نمبر 4]
(सूरातुल अहक़ाफ़, आयत न॰ 4)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “(काफिर लोग आप ﷺ से बहस करें तो फ़र्माओ): लाओ मेरे पास (अपनी कोई) किताब इस (क़ुरआन) से पहले या फिर इल्म के (नक़ल शुदा) आसार, अगर तुम सच्चे हो”.

उम्मते मुहम्मदिया ﷺ पर “शैतान” का ख़तरनाक हमला:

हमारा हक़ीक़ी दुशमन शैतान हमें यहूदो-नसारा की तरह अपने उलेमा और दर्वेश लोगों की ﴾अन्धा धुन्ध पैरवी﴿ करवाते हुए गुस्ताख़ बनाकर हमेशा हमेशा के लिये नाकाम करवाना चाहता है। इसलिये हमारे इन्तिहाई शफ़ीक़ आक़ा इमामे आज़म, इमामे क़ाएनात, सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन, इमामुल अन्बिया वल मुरसलीन, शफ़ीउल मुज़्नन्बीन, रहमतुल्लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ﷺ (ने ﷻ ﷲ की तरफ़ से दी गई गैबी ख़बर के ज़रीए हमे पहले ही इस ख़तरे से मुताल्लिक़ आगाह फ़रमा दिया चुनाँचे:

तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: यक़ीनन तुम भी पहले लोगों के तरीक़ो के पीछे चल पड़ोगे जिस तरह बालिश्त, बालिश्त के साथ और हाथ, हाथ के साथ (बराबर होता है) हत्ता कि अगर पहले लोगों ने किसी गोह के सुराख़ में दाख़िल होने का (बिल्कुल फ़िज़ूल) काम किया तो तुम भी उनके पीछे चलोगे। “पूछा गया या रसूलुल्लाह ﷺ उन पहले लोगों से मुराद यहूदी और नस्रानी (ईसाई) है? तो आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “अगर वह मुराद नहीं तो और कौन मुराद हैं?”

[صحيح بُخارى "كتابُ الاعتصام با لكتاب والسنه" حديث نمبر7320 ، صحيح مُسلم "كتابُ العلم" حديث نمبر6781]
(सही बुखारी “किताबुल एतसाम बिल किताब वस्सुन्नह” हदीस न॰ 7320, सही मुस्लिम”किताबुल इल्म“ हदीस न॰ 6781)

इस तहरीर का “वाहिद मक्सद इस्लाह” है:

आज बाअज़ भाइयों को ﷻ ﷲ की **वहीह (क़ुरआन और सही अहादीस)** से हक बात बताई जाती है तो वह अपने फ़िर्कों के उलेमा और दर्वेशों की (अंन्धा धुंध पैरवी) करते हुए बिलकुल यहुदो नसारा की तरह उस दावत को रद्द कर देते है लिहाज़ा यहाँ मजबूरन उन्ही मशहूर उलेमा और दर्वेशों की लिखी हुई क़िताबों से चंद एक गुस्तखाना नज़रियात की निशानदही और फिर वहीह से सही इस्लामी अक़ाइद भी बयान किये जा रहे हैं ताकी लोग अपने फ़िर्कों के उलेमा और दर्वेशों की ﴾अंन्धा धुंध पैरवी﴿ करने की बजाए किसी शख़्स की वही बात मानें जो वहीह के मुताबिक़ हो क्योंकि हमारी दुनिया व आख़िरत में कामयाबी इसी पर मुनहसिर है। वहीह को छोड़ कर सिर्फ हलाक़त ही हलाक़त है: ﴾**लीजिए मुलाहिज़ा फ़रमाइये!**﴿

1 उलेमा का नज़रिया:

(मौलाना रशीद अहमद गंगोही देओबंदी साहब अपने बारे में लिखते हैं।): “झूठा हूँ, कुछ नहीं हूँ, तेरा ही ज़िल्ल (साया) है, तेरा ही वजूद है, मैं क्या हूँ, कुछ नहीं हूँ, और जो में हूँ वह तू है और मैं और तू (का फ़र्क करना) ख़ुद शिर्क दर शिर्क है”

[ديوبندى : مولانا شيخ زكريا سهارنپورى صاحب "فضائل صدقات" صفحه 558] ﴾كتب خانه فيضى لاهور﴿
(देओबंदी : मौलाला शैख़ ज़करिया सहारनपूरी साहब “फ़ज़ाइले सदक़ात” सफ़्हा 558) (क़ुतुब ख़ाना फैज़ी लाहौर)

1 वहिह का फैसला:

.... لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ٥

[سورة الشورىٰ ، آيت نمبر11]
(सूरातुल शूरा, आयत न॰ 11)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “हरगिज़ नही है कोई भी शै उसकी मिसल और वह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है”।

2 उलेमा का नज़रिया:

“जब मजमा हुआ कुफ़्फ़ार का मदीना पर कि इस्लाम का कला कमा कर दें। यह ग़ज़्वा-ए-अहज़ाब का वाकिआ है। रब عزوجل ने मदद फ़रमाना चाही अपने हबीब ﷺ की, शिमाली हवा को हुक्म हुवा जा और काफ़िरों को नेस्त व नाबूद कर दे, हवा ने कहा “बीबियाँ रात को बाहर नहीं निकलतीं। तो अल्लाह ﷻ ﷲ ने (हवा) को बांझ कर दिया। इसी वजह से शिमाली हवा से कभी पानी नहीं बरसता। फ़िर सबा से फ़रमाया तो उसने अर्ज़ किया, हम ने सुना और इताअत की वो गई और कुफ़्फ़ार को बर्बाद करना शुरु किया”।

[بريلوى : مولانا احمد رضاخاں صاحب "ملفوظات حصه چهارم" صفحه 377] ﴾بک کارنر جهلم﴿
(बरेल्वी: मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब “मल्फ़ूज़ात हिस्सा चार “ सफ़्हा 377) (बुक कार्नर जेहलुम)

2 वहिह का फैसला:

..... اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ٥

[سورة يٰس ، آيت نمبر82]
(सूरह यासीन, आयत न॰ 82)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “उस(ﷻ ﷲ)का हुक्म (तो ऐसा नाफ़िज़ है कि) जब कभी किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उसे इतना फ़रमा देना काफ़ी है कि हो जा, तो वह (उसी वक़्त) हो जाती है”।

3 उलेमा का नज़रिया: ज़ुन्नून हज़रत यूनुस علیہ السلام का लक़ब है क्योंकि आप कुछ रोज़ मछली के पेट में रहे------उलेमा फ़रमाते हैं कि उस मछली का पेट اللہ ﷻ के अर्शे आज़म से अफ़ज़ल है कि एक पैगम्बर का कुछ दिन तजल्लीगाह रहा । जब मछली का पेट अर्शे आज़म से अफ़ज़ल हो गया तो हज़रत आमिना ख़ातून का वो शिकम-ए-पाक जिसमे सय्यिदुल अंबिया ﷺ नौ माह तक जलवा अफ़रोज़ रहे तो वह अर्शे आज़म से कहीं अफ़ज़ल है"।

[بریلوی : مفتی احمد یار نعیمی صاحب "شرح مشکوٰۃ" جلد سوم صفحہ 357] ﴿قادری پبلیشرز لاہور﴾
(बरेल्वी: मुफ़्ती अहमद यार नईमी साहब "शिरह मिशकात" जिल्द सौम सफ़्हा 357) (क़ादरी पब्लिशर्स लाहौर)

3 वहिह का फैसला: اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ....O

[سورۃ الاعراف ، آیت نمبر 54]
(सूरातुल आराफ़, आयत न० 54)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "बेशक तुम्हारा रब اللہ ﷻ है जिसने पैदा फ़रमाया आसमानों और ज़मीन को छह दिन में, फिर (अर्शे आज़म) पर जलवा अफ़्रोज़ हुवा (जैसा उसकी शान के लायक़ है)

4 उलेमा का नज़रिया: "वो हिस्सा ज़मीन (क़ब्रे मुबारक) जो नबी ﷺ के आज़ा मुबारक को मस किये हुए है अलल इतलाक़ अफ़ज़ल है यहाँ तक कि काबा और अर्श व कुर्सी से भी अफ़्ज़ल है।"

[دیو بندی : مولانا خلیل احمد سہارنپوری صاحب " المہند علی المفند" صفحہ 28 ، دیو بندی : مولانا شیخ ذکریا سہارنپوری " فضائل حج " صفحہ 138] ﴿مکتبۃ العلم لاہور﴾ ، ﴿کتب خانہ فیضی لاہور﴾
(देओबंदी: मौलाना ख़लील अहमद सहारनपूरी साहब "अलमुहन्नद अलल मुफ़न्नद" सफ़्हा 28, देओबंदी: मौलाना शैख ज़करिया सहारनपूरी" फ़ज़ाइले हज" सफ़्हा 138)
(मक्तबा-अल-इल्म लाहौर), कुतुब ख़ाना फ़ैज़ी लाहौर)

4 वहिह का फैसला: مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِیٌّ عَزِیْزٌ O

[سورۃ الحج ، آیت نمبر 74]
(सूरातुल हज्ज, आयत न० 74)

तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: "मेरी शान को उस तरह मत बढ़ा देना जैसा कि नसारा (ईसाईयों) ने ईसा बिन मरयम علیہ السلام की तारीफ़ में (मुबालग़ा करते हुए उनको अपने मुक़ाम से ही) बढ़ा दिया था, मैं तो उसका बन्दा हूँ, पस मुझे اللہ ﷻ का बन्दा और उसका रसूल ﷺ ही कहना"।

[صحیح بُخاری "کتابُ الانبیاء" حدیث نمبر 3445]
(सहीह बुख़ारी "किताबुल अंबिया" हदीस न० 3445)

तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना जुन्दुब رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी वफ़ात से 5 दिन पहले इर्शाद फ़रमाया: "ख़बरदार तुम से पहले लोग अपने अंबिया علیہم السلام और नेक लोगों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लेते थे ख़बरदार! तुम लोग क़ब्रों को सज्दागाह ना बनाना बेशक मैं तुम्हें इस हरकत से मना करता हूँ"।

[صحیح مُسلم "کتابُ المساجد" حدیث نمبر 1188]
(सही मुस्लिम "किताबुल मसाजिद" हदीस न० 1188)

5 उलेमा का नज़रिया: "एक दिन ग़ौसे आज़म (सबसे बड़े मुश्किल कुशा) शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी सात औलिया के हमरा बैठे हुए थे, निगाह बसीरत से मुलाहिज़ा फ़रमाया कि एक जहाज़ क़रीब ग़र्क़ होने के है, आपने हिम्मत व तवज्जह बातिनी से उसको ग़र्क होने से बचा लिया।

[دیو بندی : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب "امداد المشتاق" صفحہ 46] ﴿اسلامی کتب خانہ﴾
(देओबंदी: मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब "इम्दादुल मुशताक़" सफ़्हा 46) (इस्लामी कुतुब ख़ाना)

5 वहिह का फैसला: [سورۃ النمل ، آیت نمبر 62] اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَیَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَیَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ O
(सूरातुल नम्ल, आयत न० 62)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(भला ग़ौर तो करो ऐ लोगो!) कौन क़ुबूल करता है बेक़रार की फ़रियाद को जब वह (मुसीबत के वक़्त) उस (اللہ ﷻ) को पुकारे, और दूर करता है तक्लीफ़ को, और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाता है, क्या اللہ ﷻ के सिवा भी कोई और माबूद है? (नहीं हरगिज़ नहीं मगर) तुम लोग कम ही ग़ौर व फ़िक्र करते हो!"

6 उलेमा का नज़रिया: "अर्ज़: ग़ौस (मुश्किल कुशा: विलायत का एक दर्जा) हर ज़माने में होता ?, इर्शाद: बगैर गौस के ज़मीन व आसमान क़ायम नहीं रह सकते!"

[بریلوی : مولانا احمد رضا خاں صاحب "ملفوظات حصہ اول" صفحہ 106] ﴿بک کارنر جہلم﴾
(बरेल्वी: मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब "मलफ़ूज़ात हिस्सा अव्वल" सफ़्हा 106) (बुक कार्नर जेहलुम)

6 वहिह का फैसला: اِنَّ اللّٰهَ یُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَىِٕنْ زَالَتَاۤ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِیْمًا غَفُوْرًا O

[سورۃ فاطر ، آیت نمبر 41]
(सूरह: फ़ातिर, आयत न० 41)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: बेशक اللہ ﷻ ही ने आसमानों और ज़मीन को थाम रखा है कि वह (अपनी जगह से) टल ना जाएं। और अगर वह टल जाएं तो फिर اللہ ﷻ के सिवा कोई एक भी ऐसा नहीं कि उनको थाम सके। बेशक वह बर्दाशत करने वाला माफ़ करने वाला है।"

7 उलेमा का नज़रिया: एक मर्तबा सय्यद जुनैद बुग़दादी दरयाए दजला पर तशरीफ़ लाए और या اللہ ﷻ कहते हुए उस पर ज़मीन की मिसल चलने लगे।----एक शख़्स ने अर्ज़ की कि मैं किस तरह आऊँ फ़रमाया: या जुनैद या जुनैद कहता चला आ। उसने यही कहा और दरया पर ज़मीन की तरह चलने लगा। जब बीच दरया में पहुंचा शैतान-ए-लईन ने दिल में वसवसा डाला (कि) हज़रत ख़ुद तो या اللہ ﷻ कहें और मुझसे या जुनैद कहलवाते हैं।-----उसने या اللہ ﷻ कहा और साथ ही ग़ौता खाया। पुकारा हज़रत मैं चला। फ़रमाया वही कहो या जुनैद या जुनैद---उसने कहा और दरिया पर ज़मीन की तरह चलने लगा----फ़रमाया:"अरे नादान! अभी तो जुनैद तक पहुँचा नहीं اللہ ﷻ तक रसाई की हवस है?

[بریلوی : مولانا احمد رضاخاں صاحب "ملفوظات حصہ اول" صفحہ 97] ﴿بک کارنر جہلم﴾
(बरेल्वी: मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब "मलफ़ूज़ात हिस्सा अव्वल" सफ़्हा 97) (बुक कार्नर जेहलुम)

7 वहिह का फैसला: **तर्जुमा सहीह हदीस:** "सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे सवारी पर बैठ हुवा था तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: "ऐ बेटे! तू اللہ ﷻ के अहकाम की हिफ़ाज़त कर اللہ ﷻ तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। اللہ ﷻ के हुक़ूक़ का ख़्याल रख तू उसे अपने सामने पाएगा। ﴿اِذَا سَاَلْتَ فَاسْاَلِ اللّٰهَ وَاِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ﴾ (तर्जुमा: जब तू सवाल करे तो सिर्फ़ اللہ ﷻ से करना और जब तू मदद तलब करे तो सिर्फ़ اللہ ﷻ ही से मदद तलब करना) और जान ले कि अगर पूरी उम्मत भी जमा होकर तुझे कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी मगर जो اللہ ﷻ चाहे। और अगर पूरी उम्मत भी जमा होकर तुझे कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी मगर जो चाहे (तक़्दीर लिखने के बाद) क़लम उठ गये और सहीफ़े ख़ुश्क हो गए"। **[नोट: इमाम तिर्मिज़ी رحمہ اللہ ने इसकी सनद को हसन सहीह कहा है]**

[جامع ترمذی "کتاب صفۃ القیامۃ" حدیث نمبر 2516]
(जामे तिर्मिज़ी "किताब सिफ़तुल क़यामह" हदीस न० 2516)

8 उलेमा का नज़रिया: "(सूरातुल कहफ़ आयत न० 110 ﴿قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ﴾ "ऐ महबूब ﷺ फरमादो कि मैं तुम जैसा बशर (इन्सान) हूँ" ।-------इस आयत में कुफ्फ़ार से ख़िताब है चूंकि हर चीज़ अपनी ग़ैर जिन्स से नफ़रत करती है। लिहाज़ा फ़रमाया गया कि ऐ कुफ़्फ़ार तुम मुझसे घबराओ नहीं। मैं तुम्हारी जिन्स से हूँ यानी बशर हूँ (जैसा कि) शिकारी जानवरों की सी आवाज़ निकाल कर शिकार करता है इससे कुफ्फार को अपनी तरफ़ माइल करना मक़्सूद है"।

[بریلوی : مولانا مفتی احمد نعیمی صاحب "جآء الحق" صفحہ 145] ﴿قادری پبلیشرز لاہور﴾
(बरेल्वी: मौलाना मुफ़्ती अहमद नईमी साहब "जाअल हक्क़ु" सफ्हा 145 (कादरी पब्लिशर्ज लाहौर)

8 वहिह का फैसला: .... اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا O

[سورة بنی اسرائیل، آیت نمبر 48 ، سورة الفرقان، آیت نمبر 9]
(सूरह बनी इस्राईल, आयत न॰ 48, सूरातुल फुरकान, आयत न॰ 9)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “(ऐ महबूब ﷺ) जरा देखो तो ये (गुस्ताख) लोग आपके मुत्तालिक़ कैसी कैसी मिसालें बयान करते हैं, सो वे गुमराह हो गये पस वे रास्ता हिदायत नहीं पा सकते”।

9 उलेमा का नज़रिया: “अगर बअज़ उलूम गैबिया मुराद हैं तो उसमें हुज़ूरे अकरम ﷺ की क्या तख्सीस है, ऐसा इल्म-ए-ग़ैब जैदो व उमर बल्कि हर सबी (बच्चा) व मजनू (पागल) बल्कि जमीअ (सारे) हैवानात बहायम (चौपायों) के लिये भी हासिल है”।

[دیوبندی : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب "حفظ الایمان" صفحہ 13 ، دیو بندی : مولانا خلیل احمد سہارنپوری صاحب "المہند" صفحہ 51] ﴾قدیمی کتب خانہ﴿ ﴾مکتبہ العلم لاہور﴿
(देओबंदी : मौलाना अशरफ अली थानवी साहब “हिफ्ज़ुल ईमान” सफ्हा 13, देओबंदी: मौलाना खलील अहमद सहारनपूरी साहब “अलमुहन्नद अलल मुफ़न्नद” सफ्हा 51) (कदीमी कुतुब खाना, मक्तबा अल इल्म लाहौर)

9 वहिह का फैसला: .... عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا O اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا O

[سورة الجن ، آیات نمبر 26 تا 27]
(सूरातुल जिन्न, आयत: 26 से 27)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “वह (اللہ ﷻ) ही ग़ैब का जानने वाला है पस वह अपने ग़ैब की इत्तला किसी को नहीं देता, सिवाय अपने रसूल के जिसे वह पसंद कर ले (बाकी लोगों में से) लेकिन उसके आगे पीछे भी पहरेदार मुकर्रर कर देता है”।

10 उलेमा का नज़रिया: “(नमाज के दोरान) ज़िनाह के वसवसे से अपनी बीवी की मुज़ामअत का ख्याल बेहतर है। और शैख या इस जैसे और बुर्ज़ुगों की तरफ ख्वा जनाब रिसालत मआब ﷺ ही हों अपनी हिम्मत को लगा देना अपने बैल और गधे की सूरत में डूब जाने से बुरा है”।

[دیوبندی بزرگ : مولانا عبد الحی صاحب "صراط مستقیم" صفحہ 169] ﴾اسلامی اکیڈمی لاہور﴿
(देओबंदी बुर्ज़ुग: मौलाना अब्दुल हई साहब “सिराते मुस्तकीम” सफ्हा 169) (इस्लामी अकैडेमी लाहौर)

10 वहिह का फैसला: **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसउद رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया “----(नमाज के तशह्हुद में) यूँ कहा करो: ﴾ اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ...... اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ..... عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿
(तर्जुमा: मेरी कौली, बदनी और माली इबादात اللہ ﷻ के लिये खास हैं, सलाम हो ऐ नबी ﷺ आप ﷺ पर और اللہ ﷻ की रहमतें और बरकतें, सलामती हो हम पर और اللہ ﷻ के नेक बन्दों पर भी) पस जब वह ऐसा कहेगा तो आसमान व जमीन में मौज़ूद हर नेक बन्दे को (और खास तौर पर नबी ﷺ को) यह सलाम पहुँच जाएगा”।

[صحیح بُخاری "کتابُ الاذان" حدیث نمبر 831 ، صحیح مُسلم "کتابُ الصلوٰۃ" حدیث نمبر 897]
(सही बुखारी “किताबुल अजान” हदीस न॰ 831, सही मुस्लिम “किताबुस्सलात” हदीस न॰ 897)

11 उलेमा का नज़रिया: “और यकीन जान लेनी चाहिये कि हर मख्लूक बड़ा हो या छोटा वह اللہ ﷻ की शान के आगे चमार से भी जलील है-----(आगे चलकर खुद ही बड़ा या छोटा की तारीफ भी बयान कर दी, चुनांचे लिखते हैं) अंबिया व औलिया को जो اللہ ﷻ ने सब लोगों से बड़ा बनाया है सो उनमें यही बड़ाई है कि اللہ ﷻ की राह बताते हैं”।

[دیوبندی بزرگ : مولانا شاہ اسماعیل دھلوی شہید صاحب "تقویۃ الایمان" صفحہ 25 اور 32] ﴾میر محمد کتب خانہ آرام باغ کراچی 1368 ہجری﴿
(देओबंदी बुर्ज़ुग : मौलाना शाह इस्माईल देहल्वी शाह सईद साहब “तक्वियतुल ईमान” सफ्हा 25 और 32) (मीर कुतुब खाना आराम बाग कराची 1368 हि॰)

11 वहिह का फैसला: ..... وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ O

[سورة المنافقون ، آیت نمبر 8]
(सूरातुल मुनाफिकून, आयत न॰ 8)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “और गैरत तो सिर्फ اللہ ﷻ के लिये, उसके रसूल ﷺ के लिये, और ईमान वालों के लिये है, मगर मुनाफिकों को इसका इल्म नहीं है।“

12 उलेमा का नज़रिया: “हजरत दाऊद عليه السلام की एक नजर जब वहाँ पड़ी जहाँ ना पड़नी चाहिये थी यानी औरिया की बीवी पर, तो आप عليه السلام को हक तआला की तरफ से तंबीह का सामना करना पड़ा।---हमारे पैगम्बर ﷺ की एक इसी तरह की निगाह हजरत जैद رضی اللہ عنہ की बीवी पर पड़ी तो हजरत जैद رضی اللہ عنہ पर उनकी बीवी हराम हो गई (इन्हीं से बाद में नबी ﷺ ने निकाह फरमाया यानी उम्मुल मौमिनीन सय्यिदा जैनब رضی اللہ عنہا) इसलिये कि हजरत दाऊद عليه السلام की नजर हालते सहव (यानी हालते होश) में थी और हमारे पैगम्बर ﷺ की नजर हालते सुक्र (यानी मदहोशी की हालत में थी”।

["کشف المحجوب" باب 14 سُکر اور صحو کا بیان: دیوبندی ترجمہ : مولانا عبدالروف فاروقی صفحہ 291 ، بریلوی ترجمہ: مولانا فضل الدین گوھر صفحہ 267] ﴾اسلامی کتب خانہ لاہور﴿ ﴾ضیا القرآن پبلیکیشنز لاہور﴿
(“कशफुल महजूब” बाब 14 सुक्र और सहव का बयान: देओबंदी तर्जुमा: मौलाना अब्दुर्रऊफ फारुकी सफ्हा 291, बरेल्वी तर्जुमा: मौलाना फज्लुद्दीन गौहर सफ्हा 267) (इलामी कुतुब खाना लाहौर) (जियाउल कुरआन पब्लिकेशन लाहौर)

12 वहिह का फैसला: ... وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى O مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى O وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى O اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى O

[سورة النجم، آیت نمبر 1 تا 4]
(सूरातुल नज़्म, आयत न॰ 1से 4)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: “कसम है सितारे की जब वह उतरे। तुम्हारे साहब (मुहम्मद ﷺ ना तो कभी बहके हैं और ना कभी टेढ़ी राह पर चले हैं और ना ही वह अपनी ख्वाहिशे नफ्स से कोई बात कहते हैं (बल्कि) वह तो नहीं मगर वहीह जो (اللہ ﷻ की तरफ से) उन्हें की जाती है।

तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ पर्दा नशीन कुंवारी लड़कियों से भी ज्यादा शर्म व हया रखने वाले थे, जब कोई ऐसी चीज देखते जो आप ﷺ को नागवार होती तो हम आप ﷺ के चहरा-ए-मुबारक से पहचान लेते थे।“

[صحیح بُخاری "کتابُ الادب" حدیث نمبر 6102 ، صحیح مُسلم "کتابُ الفضائل" حدیث نمبر 6032]
(सहीह बुखारी ”किताबुल अदब“हदीस न॰ 6102, सहीह मुस्लिम “किताबुल फजाइल” हदीस न॰ 6032)

13 उलेमा का नज़रिया: “ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी साहब (जो खलीफा थे ख्वाजा मुईनुद्दीन चिशती साहब के) एक दफ़्आ उनके पास एक शख्स आया और अर्ज किया कि मैं मुरीद होने आया हूँ। ख्वाजा साहब ने फरमाया: जो कुछ हम कहेंगे करेगा, अगर यह शर्त मन्जूर है तो मुरीद करुंगा। उसने कहा जो कुछ आप कहेंगे वही करुंगा। ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी ने फरमाया: तू कल्मा इस तरह पढ़ता है ﴾ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ﴿ तो अब एक बार इस तरह पढ़ ﴾ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ چِشْتِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﴿ चूंकि रासीखुल अक़ीदा (अकीदे का पक्का) था इसलिये उसने फौरन पढ़ दिया। ख्वाजा साहब ने उससे बैअत ली और बहुत कुछ खिलअत व नेमत अता फरमाया और कहा: मैंने फ़क़त तेरा इम्तिहान लिया था कि तुझको मुझसे किस कदर अकीदत है वरना मेरा मक्सूद यह ना था कि तुझसे इस तरह कलमा पढ़वाऊँ”।

[بزرگ ﴾ بریلوی + دیو بندی ﴿ : خواجہ فرید الدین گنج شکر صاحب "ھشت بہشت ﴾ فوائد السالکین ﴿" صفحہ 19] ﴾شبیر برادرز لاہور﴿
(बुर्ज़ुग (बरेल्वी+देओबंदी) ख्वाजा फरीदुद्दीन गन्ज शकर साहब “हश्त बहिश्त (फवाइदुस्सालिकीन)” सफ्हा 19) (शब्बीर ब्रदर्स लाहौर)

13 वहिह का फैसला: **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया : “इस्लाम की बुनियाद 5-चीजो पर रखी गई है: Ⅰ गवाही देना ﴾ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ﴿ और यह कि ﴾ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ﴿ और Ⅱ नमाज कायम करना, और Ⅲ जकात अदा करना, और Ⅳ हज करना, और Ⅴ रमजान के रोजे रखना”।

[صحیح بُخاری "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 8 ، صحیح مُسلم "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 113]
(सही बुखारी “किताबुल ईमान” हदीस न॰ 8, सही मुस्लिम “किताबुल ईमान” हदीस न॰ 113)

14 उलेमा का नज़रिया: एक शख्स ने ख्वाब देखा जिसमें उसने कलमा पढ़ा: لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ اَشْرَفُ عَلِیْ رَسُوْلُ اللهِ--- फिर बाद में बेदार होकर भी बे इख्तियारी में कहने लगा। اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَنَبِیِّنَا وَمَوْلٰینَا اَشْرَفَ عَلِیْ फिर अपना वाकिआ लिखकर अपने पीर अशरफ अली थानवी को भेजा तो उन्होंने ने जवाब दिया: "उस वाकिआ में तसल्ली थी कि जिसकी तरफ तुम रुजू करते हो (यानी अशरफ अली थानवी साहब देओबंदी) वह बिऔनिही ताला मुत्तबा-ए-सुन्नत है"

[دیو بندی : مولانا اشرف علی تھانوی صا حب "الا مداد" عدد 8 ماہ صفر 1336ھ جلد 3 صفحه 35] ﴾از مطبع امداد المطابع تھانہ بھون﴿
(देओबंदी : मौलाना अशरफ अली थानवी साहब "अल इमदाद" अदद 8 माह सफर 1336 हि॰ जिल्द 3 सफ्हा 35) (अज मतबा इम्दादुल मताबे थाना भवन)

14 वहिह का फैसला: اِنَّ اللهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا O [سورۃ الاحزاب ، آیت نمبر 56]
(सूरातुल अहजाब, आयत न॰ 56)

तर्जुमा सहीह हदीस: "बेशक अल्लाह ﷻ और उसके फरिश्ते नबी ﷺ पर दरुद भेजते हैं (तो) ऐ ईमान वालो तुम भी उनपर दरुद और खूब सलाम भेजो"।

15 उलेमा का नज़रिया: "(कब्रे मुबारक में) आप ﷺ की हयात दुनिया की सी है बिला मुकल्लफ होने और यह हयात मख्सूस है आँ हजरत और शुहदा के साथ, बर्जखी नहीं है, जो हासिल है तमाम मुसलमानों को ------साबित हुवा कि आप ﷺ की हयात दुनियावी है"।

[دیو بندی : مولانا خلیل احمد سہارنپوری صا حب "المہند علی المفند" صفحه 30] ﴾مکتبہ العلم لاہور﴿
(देओबंदी : मौलाना खलील अहमद सहारनपूरी साहब "अल मुहन्नद अलल मुफन्नद" सफ्हा 30)

15 वहिह का फैसला: وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ O... [سورۃ البقرہ ، آیت نمبر 154]
(सूरातुल बकरह, आयत न॰ 154)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और मत कहो मुर्दा उन को जो लोग शहीद कर दिये जाएं। अल्लाह ﷻ की राह में, बल्कि वह तो जिन्दा हैं लेकिन तुम उनकी जिन्दगी का शऊर नहीं रखते"।

16 उलेमा का नज़रिया: "अंबिया किराम علیہم السلام की हयात (कब्रों में) हकीकी हिस्सी दुनियावी है----बल्कि सय्यदी (मेरे आका) मुहम्मद बिन अब्दुल बाकी जुर्कानी फरमाते हैं कि अंबिया علیہم السلام की कुबूरे मुतहिहरा में अजवाजे मुतहिहरात पेश की जाती हैं और वे उनके साथ शब्बासी फरमाते हैं"।

[بریلوی : مولانا احمد رضا خاں صا حب "ملفوظات حصہ سوم" صفحه 249] ﴾بک کارنر جہلم﴿
(बरेल्वी: मौलाना अहमद रजा खाँ साहब "मलफूजात हिस्सा सोम" सफ्हा 249) (बुक कार्नर झेलम)

16 वहिह का फैसला: اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ.......O [سورۃ الاحزاب ، آیت نمبر 6]
(सूरातुल अहजाब, आयत न॰ 6)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(हमारे ख़ास) नबी ﷺ मौमिनीन की जानों से भी बढ़ कर उन पर हक रखते हैं, और इनकी बीवियाँ उन (मौमिनीन) की माएँ हैं"।

17 उलेमा का नज़रिया: "अब रहा मशाइख की रुहानियत से इस्तफादा और उनके सीनों और कब्रों से बातिनी फयोज़ (फायदे) हासिल करना सो बेशक यह सही है मगर उस तरीके से जो इसके अहल और खास लोगों को मालूम है ना उस तर्ज से जो अवाम में रायज हैं"।

[دیو بندی : مولانا خلیل احمد سہارنپوری صا حب "المہند علی المفند" (سوال نمبر 11) صفحه 40] ﴾مکتبہ العلم لاہور﴿
(देओबंदी: मौलाना खलील अहमद सहारनपूरी साहब "अल मुहन्नद अलल मुफन्नद" (सवाल न॰11) सफ्हा 40) (मक्तबा अल इल्म लाहौर)

17 वहिह का फैसला: **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं :"सय्यिदना उमर बिन खत्ताब رضی اللہ عنہ के जमाने में जब लोग कहत साली का शिकार हो जाते तो सय्यिदना उमर رضی اللہ عنہ (कब्रे रसूल ﷺ से फैज़ लेने की बजाए) सय्यिदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ के वसीले से बारिश की दुआ करते और अर्ज करते: "ऐ अल्लाह ﷻ बेशक पहले पहले हम अपने नबी ﷺ को तेरी बारगाह में वसीले के तौर पर पेश करते थे और (उनकी दुआ से) तू हम पर बारिश बरसा दिया करता था। अब (उनकी वफात के बाद) हम तेरी बारगाह में अपने नबी ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर लेकर आए हैं। पस (उनकी दुआ से) हम पर बारिश नाजिल फरमा। (रावी कहते हैं) पस यूँ उनपर बारिश बरस पड़ती"।

[صحیح بُخاری "کتابُ الا ستسقاء" حدیث نمبر 1010]
(सही बुखारी "किताबुल इस्तिस्का" हदीस न॰ 1010)

18 उलेमा का नज़रिया: "अगर बिल फर्ज बाद जमाना-ए-नबवी ﷺ भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ातमियत मुहम्मदी ﷺ में कुछ फर्क ना आएगा"।

[دیوبندی : مولانا قاسم نانوتوی صا حب "تحذیرا لناس" صفحه 34] ﴾دارالاشاعت کراچی﴿

नोट: इसी इबारत को (गुलाम अहमद कादयानी) ने भी अपनी (झूठी नबुव्वत) की दलील में पेश किया था।

(देओबंदी: मौलाना कासिम नानोत्वी साहब "तहजीरुन्नास" सफ्हा 34) (दारुल इशाअत कराची)

18 वहिह का फैसला: مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا O.... [سورۃ الاحزاب، آیت نمبر 40]
(सूरतुल अहजाब, आयत न॰ 40)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: मुहम्मद ﷺ तो नहीं तुम मर्दों में से किसी के बाप बल्कि वह तो अल्लाह ﷻ के रसूल और खातमुन्नबिय्यीन علیہ السلام हैं और हर चीज अल्लाह ﷻ के इल्म में है"।

तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना सोबान رضی اللہ عنہ रिवायत करते के रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: "मेरी उम्मत में ﴾30 झूठे﴿ पैदा होंगे, उनमें से हर एक यही दावा करेगा कि वह अल्लाह ﷻ का नबी है जब्कि मैं (खातमुन्नबिय्यीन) हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं"।

(इसकी सनद बिल इज्मा मुहद्दिसीन सहीह है) (सुनन अबी दाऊद "किताबुल फितन" हदीस न॰ 4252)

19 उलेमा का नज़रिया: (रसूलुल्लाह ﷺ के 650 साल बाद) शेख अबू यज़ीद कुर्तबी ऐसे नौजवान को मिले जिसे लोगों के मत्तालिक कशफ़ हो जाता था के कौन जन्नत में है और कौन दोज़ख में? बल्कि करतबी साहब ने उसकी माँ को 70,000 मर्तबा कलमा बक्श कर उसके कशफ़ के सहीह होने का फ़ौरन तजरीब भी कर लिया.

[دیوبندی : مولانا شیخ زکریا صا حب "فضائل أعمال" صفحه 484] ﴾کتب خانہ فیضی لاہور﴿
(देओबंदी: मौलाना शैख़ ज़करिया साहब "फज़ाईल-ए आमाल" सफ़्हा 484) (कुतुब्खाना फैज़ी लाहौर)

19 वहिह का फैसला: وَمَا كَانَ اللهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ.....O..... [سورۃ آلِ عمران ، آیت نمبر 179]
(सूरह आले इम्रान, आयत न॰ 179)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "और अल्लाह ﷻ (की यह शान) नहीं है कि तुम लोगों को ग़ैब पर आगाह करदे बल्कि अल्लाह ﷻ (ग़ैब की खबरों के लिये) अपने रसूलों में से जिसे चाहता है चुन लेता है" ।

आखिरी वसिय्यत:

सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी वफात से 3 माह पहले हज्जतुल विदा के मौक़े पर वसिय्यत करते हुए इर्शाद फरमाया:

★ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "बेशक मैं अपने बाद तुम में दो ऐसी अज़ीम चीजे छोड़ कर जा रहा हूँ कि अगर उन्हें मज़बूती से पकड़ लोगे तो कभी गुमराह ना होंगे: I अल्लाह ﷻ की किताब और II उसके रसूल ﷺ की सुन्नत (जो सहीह हदीसों से माखूज हो)" ।

[الموطاء لِلمالك "کتابُ القدر" حدیث نمبر 1628 ، المُستدرك لِلحاكم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 318]
(अल मौअत्ता लिल मालिक "किताबुल कद्र" हदीस न॰ 1628, अल मुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न॰ 318)

★ **नोट:** अल्लाह ﷻ ने उलेमा और दर्वेश की तालीमात के बजाए अपनी वहीह (कुरआन और उसकी तफ्सीर यानी सहीह हदीस) की हिफाज़त की जिम्मेदारी खुद ली है। [سورۃ الحجر، آیت نمبر 9] (सूरतुल हजर, आयत न॰ 9)

★ **नोट:** ﴾इज्मा-ए-उम्मत﴿ को हुज्जत मानना दरअसल कुरआन व सहीह हदीस का हुक्म मानने में ही दाखिल है : अगर कुरआन व सुन्नत (सहीह हदीस) और इज्मा-ए-उम्मत की मुखालफ़त ना आए तो ﴾कयास या इज्तिहाद﴿ करना जायज है: [النساء : 115] ، [المُستدرك لِلحاكم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 399] (अन्निसा,115)(अलमुस्तद्रक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न॰ 399) [المُصنف لابن ابی شیبة "کتابُ البیوع والاقضیة" أثر نمبر 22,990] (अल मुसन्नफ लिइब्ने अबी शैबह "किताबुल बुयू वल अक्जियह" असर न॰ 22, 990)